पुस्तक समीक्षा - डॉ० शिबन कृष्ण रैणा

एम.के.रैना सुंज़ अफसानु सोंबुरन ‘कॆंह नॊन, कॆंह सॊन’

पुस्तक का नाम	:	केंह नॊन केंह सॊन (कुछ दृश्य, कुछ अदृश्य)
लेखक / कहानीकार	:	एम० के० रैना
ाीप्ति स्थान	:	एक्सीशेंन्स, ००१-अ, पुष्प विहार,शास्त्री नगर, वसई रोड वेस्ट, ४०१ २०२, डिस्ट्रिक्ट ठाणे।
पृष्ठ संक्षा / मूल्य	:	९६, रु ३०.००
समीक्षक	:	डॉ० शिबन कृष्ण रैणा, २/५३७, अरावली विहार, अलवर ३०१ ००१ ई-मेलः skraina@sancharnet.in

श्री एम० के० रैना के नए कहानी संग्रह ‘केंह नॊन, केंह सॊन’ में पांच कहानियां संगृहीत हैंः ‘नवि ज़मानुक ठुकु शुकुर’, ‘वठ’, ‘तबदीली’, ‘शॅमीमु’ और ‘ज़ान द्यद’। इससे पूर्व इनका कथा संग्रह ‘च़ॊक मॊदुर’ (खट्टा मीठा) ंिकाशित हुआ था जिसने रैना जी की कहानी कला और कश्मीरी भाषा पर उनकी सुन्दर पकड को पाठकों के बीच चर्चा का विषय बना दिया था और यह रेखांकित कर दिया था कि विस्थापन की कडुआहट को चखते हुए भी कश्मीरी लेखक की लेखनी थमी नहीं है। इस संग्रह की कहानियों को पढ कर मैं तब इस निष्कर्ष पर सहसा पहुंचा था कि कश्मीरी को दूसरा बंसी निर्दोश मिल गया है।

रैना जी के नए संकलन की पाँचों कहानियां अपनी गहरी मानवीय संवेदना, वर्ण्य-विषय की विविधता तथा भाषा की ंिखरता के लिए पठनीय ही नहीं, विचारणीय भी हैं। ंित्येक कहानी में एक सुन्दर सन्देश है, एक विचार छुपा हुआ है। **‘नवि ज़मानुक ठुकु शुकुर’** में लोक से लिये गए कथासूत्र को बडी ही कलात्मकता के साथ नए परिवेश में ढ़ाल कर नया कथात्मक रूप देने का मौलिक ंियत्न किया गया है। हास्य-व्यंग्य के छींटों ने समूची कहानी में चार चाँद लगा दिए हैं। ेिमचंद की कहानियों में वर्णित सूदखोर महाजन द्वारा गरीब किसान पर किए शोषण की याद ंिस्तुत कहानी को पढकर ताज़ा हो जाती है। जिन्होंने ेिमचंद की कहानी ‘सद्‌गति’ पढ़ी हो, वे मेरी बात से सहमत होंगे।

‘वठ’ कहानी का कथानक कश्मीर से विस्थापित हुए उन पंडितों की त्रासदी का द्योतन करता है जिनके पारिवारिक रिश्ते विस्थापन की मार से उत्पन्न आर्थिक विषमताओं के शिकार हुये हैं और उन रिश्तों का जनाज़ा निकल गया है। संकट के समय सहारा देने के बजाय बड़ा भाई अपने छोटे भाई के परिवार को भारस्वरूप समझकर उससे बड़ी तरकीब से छुटकारा पाना चाहता है, यह इस कहानी में दर्शाया गया है। कश्मीर में आतंकवाद से जनित पंडितों के विस्थापन को ंिस्तुत कहानी समाज शास्त्रीय आयाम से देखने का

न्योता देती है और यह सिद्ध करती है कि ोंय: सभी रिश्ते अर्थ से जुडे रहते हैं। विस्थापन ने रिश्तों को कैसे नंगा कर के रख दिया, यह कहानी छाती ठोंक कर बताती है।

'तबदीली' कहानी में बंसी निर्दोश की कहानी कला की तरह कथा-विस्तार, कथोत्कर्ष, कथा कौतूहल एवं कथांत पूरे ठाठ-बाठ के साथ देखने को मिलता है। तबादले का आदेश कैंसल हो जाने से महि काक के साथ साथ पाठक भी तनिक राहत की सांस लेता है। तबादले से होने वाले कष्ट का अन्दाज़ इस कहानी को पढ कर लगाया जा सकता है और वही पाठक लगा सकता है जिस ने सरकारी नौकरी की हो।

'शॅमीमु' कहानी नारी की परवशता को रूपायित करने वाली सुन्दर कहानी है जो कहानीकार की मानवतावादी दृष्टि के साथ -साथ उसकी धर्मनिर्पेक्ष विचारधारा को भी उजागर करती है।

'ज़ान द्यद' संकलन की सब से सशक्त एवं ंिभावशाली कहानी है। यह एक ंतीकात्मक कहानी है जो कश्मीर की सदियों से चली आ रही सांस्कृतिक विरासत को घाटी में हुए/हो रहे विप्लव एवं उपद्रव की पृष्ठभूमि में बडे ही भावपूर्ण ढंग से पुनर्व्याख्यायित करने का ंयित्न करती है। रैना जी ने बडे ही सिलसिलेवार तरीके से ंतीकों, बिम्बों एवं वर्णनशैली की ंगिल्भता के साथ पूरी कहानी को कश्मीरी इतिहास भूत, भविष्य एवं वर्तमान का जीता-जागता दस्तावेज़ बनाया है।

कुल मिलाकर संग्रह की सभी कहानियां रैना जी की संवेदनशीलता एवं भाषा पर उनकी अद्भुत पकड की सूचना देती है। कश्मीरी मुहावरों, ंयोगों, रूढ़ोक्तियों का सटीक इस्तेमाल कर रैना जी की भाषा सचमुच ंवािहपूर्ण एवं मुग्ध करने वाली बनी है।

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि इन कहानियों को पढ़कर रैना जी की शख्सियत एक किस्सागो कहानीकार के रूप में ही नहीं उभरती अपितु उनकी ंत्येक कहानी उन के अनुभवी जीवनानुभवों की साक्षी बन एक व्यापक संदेश भी देती हैं : ✹ मगर यिमु आसु ोंनि कथु। अज़ ओस ज़मानु बदल्योमुत .....◆ पृष्ठ ८२ (मगर यह बातें अब पुरानी हो चुकी थीं। आज ज़माना बदल चुका है। आज का व्यक्ति इतना व्यस्त है कि उसके पास दूसरे का दु:ख दर्द जानने के लिये वक्त ही नहीँ है। इतना ही नहीं, जैसे जैसे व्यक्ति की संपन्नता बढ़ती चली गई वैसे वैसे उसकी नियत में खोट भरता गया। ईर्ष्याएँ एवं द्वेष की भावनाएँ लोगों के दिलों में बस गईं। ंमिं और समर्पण का भाव कम होता गया और उसके बदले वैर और शत्रुता ने जन्म लिया .....।)

मैं श्री एम० के० रैना जी को उन के इस दूसरे कथा-संकलन को पाठकों तक पहुंचाने के लिए हार्दिक बधाई देता हूं और कामना करता हूं कि उनकी लेखनी से और भी सुन्दर कहानियाँ नि:सृत हों।